घर में सुख शांति के सरल उपाय

हर इंसान चाहता है कि मेरे घर में सुख-शांति हमेशा बनी रही। लोग बहुत परेशान होते हुए भी कुछ नहीं समझ पाते की हमें अब क्या करना चाहिए। खबर यह है कि गृहस्थ व्यक्ति हमेशा कामना करता है कि उसके घर मे शांति हो, लेकिन उसके प्रयासों के बाद भी कोई न कोई बात ऐसी हो जाती है, जो उसके मन को अशांत कर देती है ऐसे में उसके कारणों की खोज परोक्ष रूप में करनी चाहिए।

जो व्यक्ति यह समझता है कि घर के लोग उसकी बात को गंभीरता से नहीं लेते, जबकि वह हमेशा उसकी बात को गंभीरता से नहीं लेते, जबकि वह हमेशा सही होता है। ऐसे व्यक्ति को नियमित रूप से जल में थोड़ा-सा गुड मिलाकर निम्मलिखित मंत्र के साथ सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए।

यदि आपके घर में प्रतिदिन कभी भी किसी भी चीज की संपन्नता स्थिर नहीं रह पाती है तो अपने घर में महालक्ष्मी शंख को रखें, शाम में यंत्र को एकटक निहारते हुए श्रीं श्रीयेयै नम- का नियमित जप करें। जितनी अधिक संख्या में कर सकते हैं, उतना ही अच्छा है। यदि आपके घर में प्रतिदिन कोई न कोई मुसीबत आती है और आपको लगात है कि कोई आप पर तंत्र-मंत्र करवाता है तो आप किसी भी शुक्लपक्ष के सोमवार को नवदुर्गा यंत्र को घर के मुख्य द्वार पर लगाकर रोज 21 बार ऊँ ह्रीं दुर्गायै नम- का नियमित जप करें।

गीता के 11वें अध्याय के 36वें श्लोक को गत्ते पर लाल स्याही से लिखकर टांग देने से घर की समस्त बाधाएं दूर हो जाती हैं। जिस घर में नियमित रूप से अथवा प्रत्येक शुक्रवार को श्रीसूक्त या श्रीलक्ष्मी सूक्त पाठ होता है। उस घर में सदा लक्ष्मी का वास होता है।

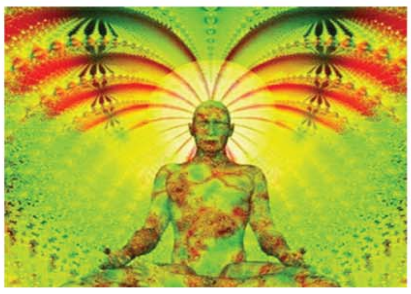

हनुमानजी करेंगे हर समस्या का समाधान

मंगलवार और शनिवार को रामभक्त हनुमान जी की पूजा की जाती है। इन दोनों दिन हनुमान जी का व्रत व पाठ करने से शुभ फल की प्राप्ति होती है। सुंदरकांड का पाठ करके हनुमान जी को प्रसन्न किया जा सकता है। यदि मंगलवार के दिन व्रत किया जाए तो मंगल दोष से भी मुक्ति मिलती है। यहां कुछ मंत्रों के बारे में बताया गया है जिनके जाप मात्र से व्यक्ति की विवाह, विद्या व रोग संबंधी सभी समस्याओं का हल हो जाता है।

इस मंत्र का जाप करने से विद्यार्थियों की बल बुद्धि में बढ़ौत्तरी होती है।

बुद्धिहीन तनु जान के सुमिरो पवन कुमार
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं हरहु कलेश विकार।

व्यक्ति को किसी प्रकार की पीड़ा या रोग है तो मंगलवार या शनिवार के दिन इस मंत्र के जाप मात्र से निवारण हो जाएगा।

हनुमान अंगद रन गाजे हांक, सुनत रजनीचर भाजे।

लड़की या लड़के के विवाह में विलंब हो रहा है तो किसी भी मंगलवार या शनिवार के दिन इस मंत्र का जाप करें। इससे विवाह शीघ्र होने के योग बनते हैं।

विश्रांति घाट

श्री कृष्ण ने स्नान कर किया था विश्राम

ततो विश्रांति तीर्थाख्यं तीर्थमहो विनाशनम। संसारमरू संचार क्लेश विश्रांतिदं नृणाम।

संसार रूपी मरूभूमि में भटकते हुए, त्रितापों से पीड़ित हर तरह से निराश्रित, विविध क्लेशों से क्लांत होकर जीव श्री कृष्ण के इस महातीर्थ में स्नान कर विश्राम अनुभव करता है इसलिए इस तीर्थ का नाम विश्रांति या विश्राम घाट है। विश्राम घाट की संरचना दो-मंजिली है। इसे बनाने के लिए लखोरी ईंट व चूने, लाल एवं बलुआ पत्थर का इस्तेमाल किया गया है। घाट को बुर्ज व खंभों पर बने अर्द्ध-गोलाकार, कांटेदार मेहराबों से सुसज्जित किया गया है। घाट का मध्य क्षेत्र खिले हुए आकर्षक रंगों से सजा हुआ है। यह तीन तरफ से मठों से घिरा हुआ है व चौथी तरफ सीढियां नदी में उतर रही हैं। मध्य क्षेत्र में संगमरमर से निर्मित श्री कृष्ण व बलराम की मूर्तियां नदी की ओर मुख करके स्थापित हैं। मूर्तियों के सामने पांच विभिन्न आकार के मेहराब हैं। बीच का मेहराब पत्थर के कुर्सी आधार व पत्थर के छोटे स्तंभ से निर्मित आयताकार है, जबकि नदी की तरफ वाले मेहराब ऊपरी मंजिल का सहारा लेकर छतरी की आकृति बनाते हैं। यहां अनेक संतों ने तपस्या की एवं अपना विश्राम स्थल बनाया। उक्त घाट पर भारत के धर्मभीरू राजाओं ने तुलादान (एक पलड़े में स्वयं व दूसरे में अपने वजन के सोना-चांदी जवाहरात) किए थे। तुला को लटकाने के मेहराब आज भी लगे हैं। विश्राम घाट के उत्तर में 12 और दक्षिण में 12 घाट हैं। दक्षिण दिशा के घाटों पर समाधियां जिनमें शंकरजी के मंदिर हैं। ये समाधियां सिंधिया परिवार से संबंधित हैं। देखभाल के अभाव में उक्त समाधियां जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुंच गई हैं। उत्तर दिशा के घाटों में गणेशतीर्थ घाट है, चक्रतीर्थ, कृष्णगंगा, स्वामीघाट, असिकुंड तीर्थ आदि हैं। जब शिवाजी महाराज आगरा किले से औरंगजेब की कैद से निकले तब मां जगदंबा (महाविद्या) की पूजा-अर्चना करके स्वर्ण छत्र चढ़ाया। तत्पश्चात गणेशजी का पूजन कर सीधे महाराष्ट्र के प्रतापगढ़ के लिए प्रस्थान किया। गणेशजी व मां जगदंबा के मंदिर आज भी उक्त स्थलों पर हैं। भगवान श्री कृष्ण ने कंस का वध कर इस स्थान पर विश्राम किया था इसलिए यहां की महिमा अपरंपार है। कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने महाबलशाली कंस को मारकर ध्रुव घाट पर उसका अंत्येष्टि संस्कार करवाकर बंधु-बांधवों के साथ यमुना के इस पवित्र घाट पर स्नान कर विश्राम किया था। किंतु भगवान से भूले-भटके जन्म-मृत्यु के अनंत, अथाह सागर में डूबते-उबरते हुए क्लांत जीवों के लिए यह अवश्य ही विश्राम का स्थान है।

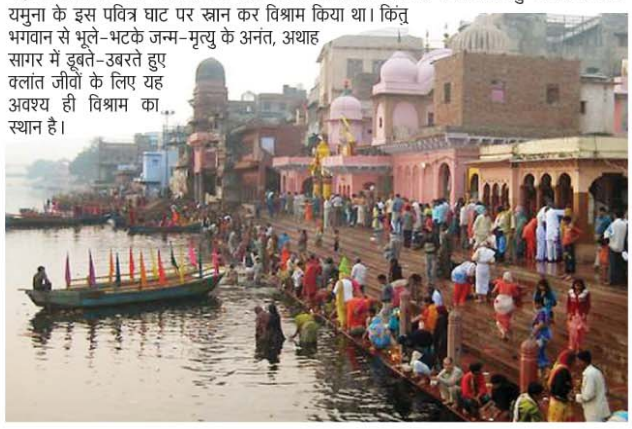

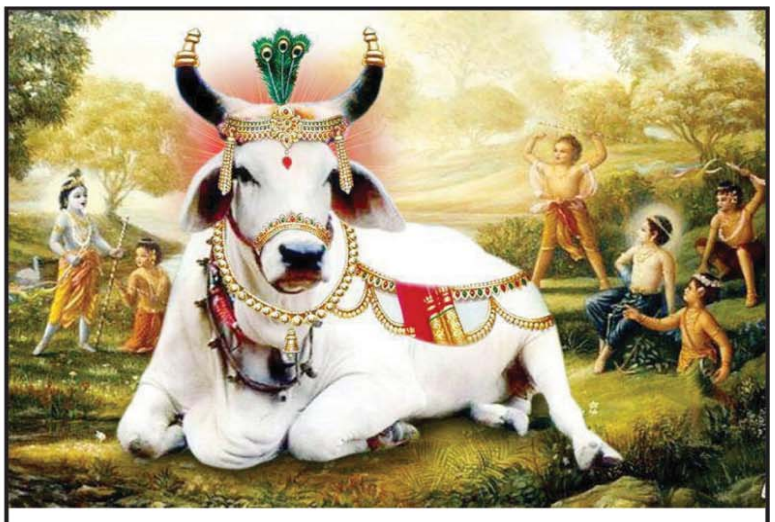

वास्तु दोषों का निवारण करती है गाय

वास्तु के अनुसार अगर भवन, घर का निर्माण करना हो यदि वहां पर बछड़े वाली गाय को लाकर बांधा जाए तो वहां संभावित वास्तु दोषों का स्वतः निवारण हो जाता है। वह कार्य निर्विघ्न पूरा होता है और समापन तक आर्थिक बाधाएं नहीं आतीं। गाय के रूप में पृथ्वी की करुण पुकार और विष्णु से अवतार के लिए निवेदन के प्रसंग बहुत प्रसिद्ध हैं। 'समरांगण सूत्रधार' जैसा प्रसिद्ध वृहद् वास्तु ग्रंथ गो रूप में पृथ्वी-ब्रह्मि के समागम-संवाद से ही आरंभ होता है। वास्तुग्रंथ 'मयमतम' में कहा गया है कि भवन निर्माण का शुभारंभ करने से पूर्व उस भूमि पर ऐसी गाय को लाकर बांधना चाहिए जो सवत्सा या बछड़े वाली हो। शास्त्रों में लिखा है की जब नवजात बछड़े को जब गाय दुलारकर चाटती है तो उसका फेन भूमि पर गिरकर उसे पवित्र बनाता है और वहां होने वाले समस्त दोषों का निवारण हो जाता है। यही मान्यता वास्तुप्रदीप, अपराजितपृच्छा आदि में भी आई है। महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा गया है कि गाय जहां बैठकर निर्भयतापूर्वक सांस लेती है, उस स्थान के सारे पापों को खींच लेती है-

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वांस मुंचति निर्भयम।
विराजयति तं देशं पापं चास्याप कर्षति॥

यह भी कहा गया है कि जिस घर में गाय की सेवा हो, वहां पुत्र-पौत्र, धन, विद्या, सुखादि जो भी चाहिए, मिल सकता है। यही मान्यता अत्रिसंहिता में भी आई है। अत्रि ने तो यह भी कहा है कि जिस घर में सवत्सा धेनु नहीं हो, उसका मंगल-मांगल्य कैसे होगा?

गाय का घर में पालन करना बहुत लाभकारी है। ऐसे घरों में सर्वबाधाओं और विघ्नों का निवारण हो जाता है। जिस घर में गाय रहती है उसमें रहने वाले बच्चों में भय नहीं रहता। विष्णु पुराण में कहा गया है कि जब श्रीकृष्ण पूतना के दुग्धपान से डर गए तो नंद दंपती ने गाय की पूंछ घुमाकर उनकी नजर उतारी और भय का निवारण किया। सवत्सा गाय के शकुन लेकर जाने से कार्य सिद्ध होता है। पद्मपुराण, और कूर्मपुराण में कहा गया है कि कभी गाय को लांघकर नहीं जाना चाहिए। किसी भी साक्षात्कार, उच्च अधिकारी से भेंट आदि के लिए जाते समय गाय के रंभाने की ध्वनि कान में पड़ना शुभ है। संतान लाभ के लिए घर में गाय की सेवा अच्छा उपाय कहा गया है। शिवपुराण व स्कंदपुराण में कहा गया है कि गो सेवा और गोदान से यम का भय नहीं रहता। गाय के पांव की धूली का भी अपना महत्व है। यह पाप विनाशक है, ऐसा गरुड़पुराण और पद्मपुराण का मत है।

33 करोड़ नहीं 33 प्रकार के देवी देवता हैं हिंदू धर्म में

हिंदू धर्म के बारे में कई ऐसी जानकारियां हैं जो बहुत ज्यादा लोगों को पता नहीं है। ऐसे में कुछ खास और गूढ़ जानकारियों को हम आपके साथ बांट रहे हैं

देवभाषा संस्कृत में कोटि के दो अर्थ होते है, कोटि का मतलब प्रकार होता है और एक अर्थ करोड़ भी होता। हिन्दू धर्म का दुष्प्रचार करने के लिए ये बात उडाई गयी है कि हिन्दुओ के 33 करोड़ देवी देवता हैं। विद्वानों के अनुसार कुल 33 प्रकार के देवी देवता हैं हिंदू धर्म में - 12 प्रकार हैं आदित्य- धाता, मित, आर्यमा, शक्रा, वरुण, अँश, भाग, विवास्वान, पूष, सविता, तवास्था, और विष्णु...! 8 प्रकार में हैं वासु- धर, ध्रुव, सोम, अह, अनिल, अनल, प्रत्युष और प्रभाष। 11 प्रकार हैं- रुद्र, हर, बहुरुप,त्रयँबक,अपराजिता, बृषाकापि, शँभू, कपार्दी, रेवात, मृगव्याध, शर्वा, और कपाली एवं दो प्रकार हैं अश्विनी और कुमार। कुल- 12+8+11+2=33

भारतीय संस्कृति के बारे में कुछ और भी जानना उचित रहेगा-

दो पक्ष- कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष।

तीन ऋण -देव ऋण, पितृ ऋण, ऋषि ऋण।

चार युग - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग

चार धाम - द्वारिका, बद्रीनाथ, जगन्नाथ पुरी, रामेश्वरम धाम

चारपीठ - शारदा पीठ (द्वारिका), ज्योतिष पीठ (जोशीमठ बद्रिधाम), गोवर्धन पीठ (जगन्नाथपुरी), श्रन्गेरिपीठ!

चार वेद- ऋग्वेद, अथर्वेद, यजुर्वेद, सामवेद! चार आश्रम - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास!

चार अंत :करण - मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार!

पंच गव्य - गाय का घी, दूध, दही,गोमूत्र, गोबर!

पञ्च देव - गणेश, विष्णु, शिव, देवी,सूर्य!

पंच तत्व - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश!

छह दर्शन - वैशेषिक, न्याय, सांख्य,योग, पूर्व मिसांसा, दक्षिण मिसांसा!

सप्त ऋषि - विश्वामित्र, जमदाग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्री, वशिष्ठ और कश्यप!

सप्त पूरी -अयोध्यापूरी,मथुरा पूरी, माया पूरी (हरिद्वार), काशी, कांची (शिन कांची - विष्णु कांची), अवंतिका और द्वारिका पूरी!

आठ योग - यम, नियम, आसन,प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधी !

आठ लक्ष्मी - आग्घ, विद्या, सौभाग्य, अमृत, काम, सत्य, भोग एवं योग लक्ष्मी!

नव दुर्गा -शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणी,चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी एवं सिद्धिदात्री!

दस दिशाएं - पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, इशान, नेऋत्य, वायव्य, अग्नि, आकाश एवं पाताल!

मुख्य 11 अवतार - मत्स्य, कच्छप, वराह,नरसिंह, वामन, परशुराम,श्री राम, कृष्ण, बलराम, बुद्ध, एवं कल्कि!

बारह मास - चेत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, अषाढ, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फागुन!

बारह राशी - मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुभ, कन्या।

बारह ज्योतिर्लिंग - सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ओमकारेश्वर, बैजनाथ, रामेश्वरम, विश्वनाथ, त्र्यंबकेश्वर, केदारनाथ, घुष्नेश्वर,भीमाशंकर, नागेश्वर।

पंद्रह तिथियां- प्रतिपदा,द्वितीय, तृतीय, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी,दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावष्या!

19 स्मृतियां - मनु, विष्णु, अत्री, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अंगीरा, यम, आपस्तम्ब, सर्वत, कात्यायन, ब्रहस्पति, पराशर, व्यास, शांख्य, लिखित, दक्ष, शातातप, वशिष्ठ!